सकारात्मक मेहनत के दूरगामी परिवर्तन

परिचय -

मेरा यह अध्ययन 21 दिनों के एक बड़े बदलाव का अध्ययन है | जिसे मैंने अपने व एक 9 साल के एक बच्चे में देखा है | जिसका नाम जावेद है, जो पूर्वी उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में स्थित कैसरगंज ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय कसेहरी बुजुर्ग में ड्राप आउट था इसके अब्बा जाकिर एक टेंट हाउस वाले के यंहा शादी विवाह में टेंट लगाने का काम करते हैं उनकी उम्र लगभग 45के आस -पास होगी, उसकी अम्मी की मौत किसी गंभीर बीमारी के चलते 4-5 साल पहले हो गयी थी जावेद की बहन तरन्नुम तथा दो बड़े भाई भी हैं जो शहर में रहकर घर की रोजी -रोटी में भागीदारी करते हैं | तरन्नुम लगभग 11 साल की होगी, और घर का सारा काम जैसे खाना पकाना, बर्तन धुलना, घांस काटना, जावेद तथा दूसरी माँ के छोटे बच्चों को भी देखती है | जावेद को बकरियां चराना, घर के छोटे कामों में अब्बू की मदत करना, तरन्नुम के साथ घांस लेने जाना पड़ता है | उसके अब्बू कहते हैं की बच्चों की देखभाल के लिए मैंने दूसरी शादी कर ली, लेकिन मुझे लगता है की जावेद और उसकी नयी माँ के रिश्ते कुछ ठीक नहीं हैं | शायद इसी लिए जावेद एक दम धूल -धूसरित, अर्धनग्न घूमता रहता है

यह थोड़ी सी जानकारी जावेद के बारे में थी ताकि हम आगे की बातों को बेहतर समझ सकें, कि जावेद में बदलाव कैसे होने शुरू हुए

आभार - टाटा ट्रस्ट के सहयोग से ट्रस्ट कम्युनिटी लाइवलीहूड्स द्वारा बहराइच जिले के दो ब्लाकों (रिसिया,कैसरगंज) के प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के साथ शिक्षण उन्नयन कार्यक्रम चलाया रहा है, जिसके अंतर्गत 50 विद्यालय सम्मिलित किये गए हैं, उनमे से कुछ विद्यालयों में प्रत्येक वर्ष गर्मी व् सर्दी की छुट्टियों में बच्चों को शिक्षा से जुड़े रहने के लिए कैम्प लगाये जाते हैं | इस वर्ष समर कैम्प का आयोजन प्राथमिक विद्यालय कसेहरी बुजुर्ग में हुआ |

एक प्रयास - इस समर कैम्प में मेरी मुलाकात जावेद से हुई, जब वह बालसभा के समय सडक के किनारे से हाफ पेंट में, अर्धनग्न खड़ा था और बच्चों कविता करते हुए बड़े ध्यान से देख रहा था | और जैसे

उसने मुझे अपनी तरफ आते देखा वह भागने लगा मने उससे कहा भागो मत मै तुम्हे पकड़ने नही आ रहा हूँ लेकिन तुम चाहो तो यहाँ के बजाय अन्दर चलकर देख सकते हो फिर जब तुम्हारा मन नहीं करेगा तो मुझसे पूछ कर चले जाना फिर वह अन्दर आया तो मैंने उससे कहा की हाथ मुह यहाँ धुल लो लेकिन उसने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया |वह अपने दोनों हाथों को सर पर रखकर बच्चों को बहुत ही उत्सुकता से देख रह था | मैंने उससे कहा की आओ हम सभी साथ मिलकर खेलें तो अन्य बच्चे शिकायत करना शुरू कर दिए "*सर जी इ कबहूँ स्कूल नाही आवत है, ऑफिस मा मिट्टी फेकत है, गरिआवत है आदि*" | तो मैंने कहा बेटा आज हम लोग खेलेंगे कोई दूसरी बात नहीं करेंगे, फिर हम सब मिलकर नेता- नेता चाल बदल खेलने लगे |जिसमे जावेद शुरुआत में बच्चों के मुह देखता रखता, लेकिन खेल में और बच्चों की बेहतर प्रतिभागिता देख कर उसका भी उसका भी मन लगने लगा जैसे नेता को देख कर उस जैसी एक्टिंग करना |*फिर उसने कहा की सर जी हमहू नेता बनबै,* तो मैंने उसे नेता बनकर दिखाया और बताया की तुम जैसा करोगे सब लोग तुमको ही देख कर करेंगे और कैचर बचना पड़ेगा एक दो बार तो उसने गल्तियाँ की लेकिन फिर वह बड़ी चालाकी से खेलने लगा, इस तरह और भी कई खेल हुए जाते समय मैंने जावेद से पूछा आज मजा आया तो वह बहुत खुश था और बोला "*सर जी एक खेल अउर करवाई देव*" | मैंने उससे कहा की कल जल्दी आना और नहा -

धोके तैयार होक आना | और अगले दिन वह शायद हमारे पहुंचने से पहले ही आ गया था उसकी बकरियां भी स्कूल के बगल के खेत में चार रही थी, और ऐसा लग रह था की जैसे सोके अभी- अभी उठा है | फिर बाल सभा शुरू हो गयी

और उसने अपनी बकरियां वहीँ बाँध कर हाथ मुह धुल कर सीधा बाल सभा में सम्मिलित हो गया | मैंने उसे मना भी नहीं किया, फिर वह सबके साथ बालगीत करना शुरू किया लेकिन लय धीमी या तेज होने की

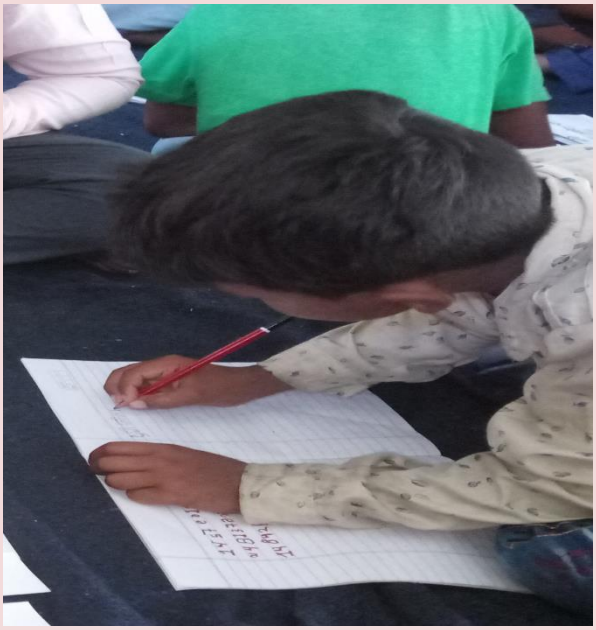

वजह से कभी सबके आगे निकल जाता और कभी पीछे छूट जाता और एकाएक चुप हो जाता फिर धीरे - धीरे 5-6 दिनों में वह समय से आने लगा और साथ गाना, गोले में खड़े होकर सबके साथ हाव भाव से कविता करना सीख गया | एक दिन मैंने साफ़ -सफाई पर बात करते हुए सबसे पूछा की कौन-कौन नहाकर आया है | तो जावेद ने भी अपना हाथ उठाया मै उसके पास जाके बोला जावेद तुम नहा के आये हो ? उसको लगा की शायद मुझे पता चल गया है तो उसने कहा की "*सर जी काल से नहाई के आइबै*" और अगले दिन से वह नहा धोके, पैंट - शर्ट पहन कर टोपी लगा कर आया और मुझसे बोला "*देखौ सर जी हम तुम्हरे जैसे टोपी लगाई के आवा हैं*| और ऐसा बोल कर स्कूल में लगे आईने के सामने खड़ा होकर टोपी निकाल कर बाल बनाया और फिर टोपी लगा लिया | फिर जब हम लोगो ने कक्षा शिक्षण शुरू किया तो उसे मौखिक चीजें जैसे गिनती तीली के माध्यम

से, कम ज्यादा, एक अधिक और एक कम, कवितायेँ करने में मजा आता था और मैंने उसे देखा की जब वह पुस्तकालय में जाता तो किताबों के ऊपर बने चित्रों को बड़े ध्यान से देखता और कुछ सोचता और कभी- कभी बच्चों के साथ बैठकर उनको पढ़ते सुनता या फिर उनके साथ चर्चा करता जैसे *"इ भलुआ देख जैसन आपन गाँव मा आवा रहा है*| फिर इस पर लम्बी चर्चा चलती रहती |वैसे तो वह किताबें पढ़ नहीं पाता, लेकिन घर ले जाने के लिए रोज कोई न कोई किताब चुनता | मै जब बोर्ड पर लिख कर कोई चीज बताता तो मुझसे ही कहता "*सर जी आगे से हतौ देखेई देव*" मैंने उसमे पढने की ऐसी जिज्ञासा देखा की वह क्लास खत्म होने के बाद भी इन काम को लिखता रहता | समय बीतता गया और मैंने देखा की जो लड़का साल भर से स्कूल आना छोड़ दिया वह पिछले 18 से 20 दिनों में एक दिन भी यहाँ तक की रवीवार और बरसात के दिन भी घर नही रुका | प्रतिदिन दांत मुंह साफ कर के बकायदा स्कूल आता, मुझे देखकर भागने वाला बच्चा आज खुद मुझसे बोलता है "*सर जी आपौ टाइम से आवा करौ*" | अन्ताक्षरी शुरू होने पर इतने गाने गाता की उसे रोकना पड जाता,नाटक में भी प्रतिभाग करता तो मजा आ जाता, नागिन डांस ऐसा करता की नागिन भी शरमा जाय |

समर कैम्प के 19वें दिन मैंने उससे कहा की जावेद तुम स्कूल काहे नहीं आते थे | तो उसने कहा की "*इक सर जी हैं ऊ हरिअर डंडा लाय मारत हैं कबहूँ तो मुर्गा बनाय देत हैं*| *तो मैंने कहा की*

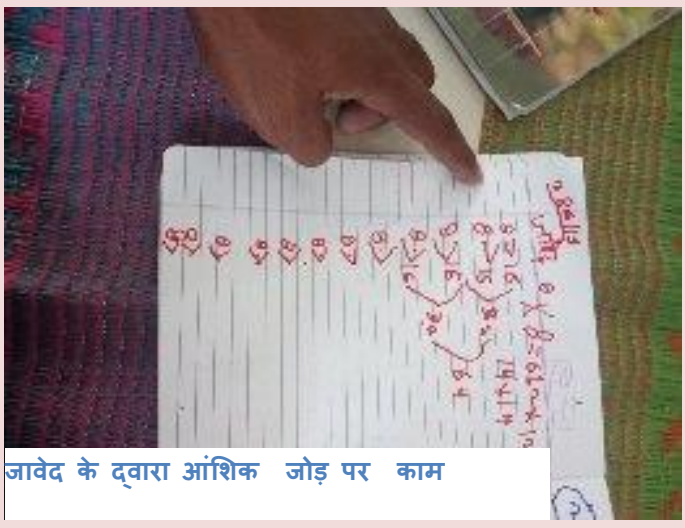

जावेद के द्वारा आंशिक जोड़ पर काम

तुमका अब इहाँ का सबसे बढियां लागत है," तो उसने बताया की सर जी रुमाल झपट्टा खेल, *इ खेल हम बकरी चरावै जाइत उहाँ खेलित है, और आप सब कोई सरल - सरल पढावत लिखावत हौ, उ कठिन देत हैं नाय लगावे पर मारत हैं* |हमने कहा यार दो दिन बाद हम लोगों का समर कैम्प खत्म हो जायेगा तो उसने रुंधे हुए स्वर में कहा, "*तब हमहू न अइबै*" और मुझसे पुछा की, *"सर तुम अब कभौं न अइबौ*"हमने कहा की कभी कभी आयेंगे लेकिन तुम जब स्कूल नही आओगे तो तुमसे कैसे मिलेंगे उसने मुझसे रुंधे हुए स्वर में कहा, "*महीना में एक्कै बार चले आयो*" मैंने उससे कहा आगे पूनम जी, ब्रिजेश जी आप की मदत करेगें इन पर विश्वास हैं न तो उसने कहा की '*हाँ इ मैडम जी और सर जी नाई मारत हैं,* फिर मैंने ब्रिजेश जी (प्रधानाध्यापक) को उससे परिचित कराया और उन्होंने उससे कहा की तुम स्कूल आओ तुम्हे कोई परेशानी होगी तो मुझसे बताना तुम्हे कोई नहीं मारेगा | पूनम ने भी कहा की बेटा तुम आओ तुम्हे कोई नहीं मारेगा मै तुम्हे ऐसे ही खेल, कवितायेँ, कहानियां सुनाउंगी | फिर मैंने उससे कहा की चलो अब हम लोग घर चलते हैं लेकिन काफी देर तक वह जाना ही नहीं चाहता था | फिर सबके समझाने पर वह घर की तरफ चला | फिर हमने उसके पिता जी से बात की उन्होंने बताया की सर जी आप सबके बात *इ घर पर बहुत करत है हम तो इ कहत हैं की जैसे आप सब पढावत हौ वैसे सब मास्टर पढावे लगें तो गाँव मा कौनो लड़का घर पर न रुकिहै* | हमने कहा की चचा बदलाव हो रहा है धीरे -धीरे सब बदलेगा आप भी स्कूल जा कर देख आया करो |

उस बदलाव को मैंने खुद जावेद में देखा था, 20 दिनों में वह प्रतिदिन स्कूल समय से आना, साफ़ सफाई रखना जैसे स्वयं को साफ रखना और खाने के बाद बिस्कुट के रैपर व् कागज को डस्ट बिन में डालना, अभिव्यक्ति क्षमता निखरना, सपने देखना, गिनती(1-30 तक) लिखना व पहचान, एक अंकीय जोड़, आरोही अवरोही क्रम, 2-3 कवितायेँ, लोक कहानियां, किताबो में चित्रों को देख कर कहानी बताना आदि में वह मन लगाकर काम करता था | और अब फिर से प्राथमिक विद्यालय कसेहरी बुजुर्ग में कक्षा 3 में नियमित छात्र है

फिर मै वहां से ऑफिस आया मेरे भी आँखों में आंसू थे और वहां के सारे बच्चों से मुझे लगाव हो गया था लेकिन जावेद उनमे सबसे अलग था | मैंने पहले ही दिन से उसके बारे सोचा था की मै इस लड़के को स्कूल तक कैसे भी कर के लाऊंगा और मै कामयाब रहा | ... **जावेद के अब्बू और अध्यापक कहते हैं-** एक दिन मै एक सामुदायिक मीटिंग के चक्कर उधर गया था | और मै जावेद के अब्बू को देखकर रुका और मैंने उनसे पूछा की जावेद अब स्कूल जाता है की नहीं,

उसके अब्बू कहते हैं साहेब जी, *'जबसे तुम्हरा ऊ कैम्प हुआ है इ लड़का घर नाही रुकत है और घरहूँ के काम कई के, रोज टेम से नहाय धो के कपडा लत्ता पहन के बाबू बना टहरत रही स्कूल जाई, औरु लडकन का भी साथ लैके जाई | तब से घरहूँ में जाय से पहले ई चप्पल जूता निकार के जाई, सर जी तुम सब की*

वजह से हमार इ लड़का स्कूल जाय लागा अगर इ तरह के कैम्प वगैरह समय - समय पर लागत रहे तो बच्चन कबहूँ घर न रुकें

उसकी शिक्षिका कहती हैं - जावेद को आपने क्या दवा पिलाई सर ये पहले तो यह स्कूल ही नहीं आता | जिस दिन आ भी जाता यह उस दिन पूरी कक्षा को परेशान कर देता यह अकेला दस के बराबर मुझे परेशान करता, लेकिन आज यह कक्षा में बड़ा शांत होकर अपने काम पूरे करने में लग जाता है लेकिन जिद्दी है अगर इसे मै अन्य बच्चों से हल्के स्तर का काम देदूं तो यह उसे नहीं करता बोलेगा की 'मैम जौन उनका लिखे क मिला है उहै हमहूँ लिखबे' वैसे आप लोगो को बहुत धन्यवाद कैम्प के वजह से काफी बच्चे नियमित हुए हैं और उनकी आदतों में भी बदलाव आया है |

विशेष आभार- टाटा ट्रस्ट से अमित जी का जिन्होंने हम सभी को केस स्ट्डी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया, और इसको मूर्त रूप देने में विशेष सहयोग रहा |

परिवर्तन कल आज और कल

देवब्रत और जावेद समर कैम्प के आखिरी दिन